शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'गोदान' में ग्रामीण जीवन

प्रगति मिमरोट
शासकीय होलकर विज्ञान महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

गाँव भारत की पहचान है। यदि सही अर्थो में भारत को जानना है तो हमें भारत और भारतीय ग्रामों को जानना होगा। भारत और भारतीय ग्रामों को जानन्समझने में साहित्य हमारी बड़ी मदद करता है। साहित्य समाज का दर्पण है और इस दर्पण में प्रतिबिंबित एक बड़ा बिंब है उपन्यास। यह एक ऐसी विधा है जिसमें समग्र जीवन का चित्रण होता है, बृहत परिवेश होता है , जो पाठक के मन में एक दृष्टिकोण निर्धारित करने की क्षमता रखता है। मुंशी प्रेमचंद के कालजयी उपन्यास 'गोदान' को अनेक तरह से व्याख्यायित और विश्लेषित किया गया है । इतना समय बीत जाने के बाद भी उसमें वर्णित परिस्थितयों को देख कर ऐसा लगता है कि तब से लेकर आज तक कुछ नहीं बदला है। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण जीवन के परिप्रेक्ष्य में 'गोदान' का विवेचन किया गया है

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के इतिहास में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं, "हमारे उपन्यासकारों के देश के वर्तमान जीवन के भीतर अपनी दृष्टि गड़ाकर देखना चाहिए। केवल राजनीतिक दलों की बातों को लेकर ही नहीं चलना चाहिए। 1 कई भारतीय उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में गाँव को अपने पूर्ण और वास्तविक रूप में चित्रित किया है। ऐसे ही ग्रामीण जीवन के चितेरे हैं प्रेमचंद और ग्रामीण जीवन की कथा कहने वाली उनकी अमर रचना है. 'गोदान', जो भारतीय ग्राम को अपनी सारी विशेषताओंए.विषमताओं सौंदर्य,.कुरूपता के साथ उदात्त एवं घृणित सत्यों को उजागर करती है। गोदान की ग्राम कथा में तत्कालीन ग्रामीण जीवन का कोई पक्ष शायद ही छूटा हो।

प्रेमचंद का ग्रामीण तथा ग्रामीण संस्कृति से इतना एकाकार थाए कि वे स्वयं उसके प्रतीक बन गए।2 आंचलिक उपन्यास की विशेष श्रेणी के बावजूद प्रेमचंद का साहित्य अपने भीतर फैले ग्रामीण जीवन के लिए सराहा जाता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी में ठीक ही लिखा है अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार-विचार, भाषा-भाव, रहन -सहन, आशा -आकांक्षा, दुख-सुख और सूझ-बूझ को जानना चाहते हैं तो प्रेमचंद से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता। आप बेखटके प्रेमचंद का हाथ पकड़ कर मेड़ों पर गाते हुए किसानों को , अंतःपुर में मान की हुई प्रियतमा को , कोठे पर बैठी हुई वार.वनीता को , रोटियों के लिए ललकते हुए भिखमंगों को, कूट परामर्श में लीन गोयन्दों को , ईर्ष्या परायण प्रोफेसरों को , दुर्बल हृदय बैंकरों को, साहस परायण चमारिन को , ढोंगी पंडितों को, फरेबी पटवारियों को , नीचाशय अमीरों को देख सकते हैं और निश्चिंत होकर विश्वास कर सकते है कि जो कुछ आपने देखा वह गलत नहीं है। गोदान का ग्रामीण सिर्फ गांव में ही सीमित नहीं है इसके पात्र शहर प्रवास कर गांव और

शहर के बीच सेतु और तुलना दोनों कार्य करते है। वस्तुतः प्रेमचंद आदर्शोन्मुख यथार्थवादी रचनाकार जिन्होंने अपने राष्ट्र की प्रायः सभी समस्याओं का चित्रण पूरी सच्चाई के साथ किया।3 गोदान में तत्कालीन समाज की विश्वसनीय झांकी सजी है , जो मनुष्य को उसी कालखंड में ले जाकर खड़ा कर देती है। ग्रामीण पात्रों की बुनावट विशेष आकर्षक है। उनके अपने अनोखे मापदंड, अपनी धर्म-अधर्म की परिभाषाएं चकित करती हैं। लोक या किसी जनमानस के बीच काल की गति के अनुसार जो गूढ़ और चिंत्य परिस्थितियां खड़ी होती हैं उनको गोचर रूप में सामने लाना और कभी -कभी निस्तार का मार्ग भी प्रत्यक्ष करना उपन्यासों का काम है। 4 और यह काम गोदान में बखूबी हुआ है। ग्रामीण पात्रों के नाम ठेठ गवँई है और उनसे उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति का पता चलता है। होरी धनिया , पुनिया, झुनिया , सीलिया निम्न सामाजिक.आर्थिक स्थिति के पात्र है , जबकि उच्च सामाजिक.आर्थिक रीति वाले पात्रों के नाम उनके सम्मान का परिचय देते है। झिंगुरी सिंह पंडित दातादीन दुलारी सहुआइन आदि यहां तक कि गोबर के शहर से पैसे कमा कर लौटते ही उसका नाम गोवर्धन हो जाता है।

ग्रामीण परिवेश की प्रमुख पहचान उनकी वेशभूषा होती है, जो उन्हें अन्य लोगों से अलग करती है। प्रेमचंद ने ग्रामीण पात्रों को लाठी, मिरजई, जूते, पगड़ी का प्रयोग करते दिखाया है। जिसमें मिरजई व पगड़ी विशेष अवसरों पर ही धारण की जाती है। धनिया की साड़ी में पैबंद लगे हैं और नवयुवती सोना के वस्त्र भी फटे हुए हैं।

भयंकर आर्थिक विपन्नता में भी होरी स्वयं को किसान कहलाने में गर्व का अनुभव करता है यद्यपि वह जानता है नौकर भी उससे अच्छा खाता व पहनता है, लेकिन फिर भी खेती में जो सुख है, वह मजबूरी में कहां। वास्तव में उसे मरजाद की चिंता है। वर्तमान को वह पूर्व जन्मों का परिणाम मानता है। छोटे.बड़े भगवान के घर से बन कर आते हैं। संपत्ति बड़ी तपस्या से मिलती है।5 भाइयों के हिस्से का पैसा हड़पना बुरा नहीं मानते पर बुरे समय में भाई का खेत जोतना धर्म है , पर उसकी उपज का इस्तेमाल करना पाप। उसकी अपनी ही नीति है। छल उसकी नीति में पाप ना था , यह केवल स्वार्थ सिद्धि थी और यह कोई बुरी बात नहीं। गोदान में छुआछूत का प्रसंग भी आया है , जहां ब्राह्मण और शूद्र कन्या के बीच में प्रेम प्रसंग और उससे उपजा तनाव चित्रित किया गया है। समाज में जाति व्यवस्था का विद्रोह भी दिखाया है।

सीलिया के समाज के लोगों का कहना है , तुम हमें ब्राह्मण नहीं बना सकते मुदा हम तुम्हें चमार बना सकते हैं। हमें ब्राह्मण बना दो , हमारी सारी बिरादरी बनने को तैयार है। जब यह समरथ नहीं है तो फिर तुम भी चमार बनो।6

प्रेमचंद सर्वत्र धार्मिक पाखंडों और अंधविश्वासों पर चोट करते हैं। उनकी दृष्टि में धर्म का सही रूप त्याग और प्रेम है। दातादीन ब्राह्मण है और जजमानी उसकी जीविका का साधन। जिसके माध्यम से वह ग्रामीणों को अपनी इच्छा अनुसार लूटता रहता है। परिणाम स्व रूप महाजनों से भी बड़ा महाजन बन जाता है।

ग्रामीण जीवन में बिरादरी एक विचित्र तत्व है जो कई बार तर्कसंगत प्रतीत नहीं होती पर ग्रामीण अपने आपको उसके इशारों पर नाचने से रोक नहीं पाते। गोबर और झुनिया के विवाह के प्रसंग में होरी के जीवन में दुख भरने का कार्य बिरादरी आर्थिक दंड लगाकर करती है। धनिया

शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

का विरोध इस बिरादरी निष्ठा के आगे नजरअंदाज कर दिया जाता है।

देहाती परिवेश में उत्सवों की भी कमी नहीं रहती। गोदान में दशहरे की रौनक और होली का बड़ा रोचक चित्रण किया गया है। प्रेमचंद का ग्रामीण सिर्फ गांव तक सीमित नहीं है। वह उस एक आम ग्रामीण की कथा भी कहता है जो शहर पलायन करता है और शहरी त्रास को झेलकर जीवन के नए पाठ पढ़कर वापस गांव आता है। इसमें पुरातन पंथी ग्रामीण पिता और आधुनिक जीवन की चाह रखने वाले पुत्र का टकराव भी है। गोबर का विद्रोह सही मायने में सीधे-सादे ग्रामीण की अपने अधिकारों की लड़ाई दर्शाता है, जो अब रीति-रिवाज या मिरजई के नाम पर ठगना नहीं चाहता और ना ही अपने समाज के डर के आगे अपने प्रेम की बलि चढ़ा पाता है। वास्तव में गोदान में ग्रामीण परिवेश का समग्र चित्रण और गाँवों के बदलने का संकेत भी दिया है।प्रेमचंद ने ग्रामीण कथा के पात्रों को शहर पहुंचाकर तत्कालीन औपनिवेशिक पूंजीवादी सामंती तथा महाजनी शोषण की वास्तविकता भी चित्रित की है। गोदान भारतीय समाज में ग्रामीण व्यवस्था के शहरी विस्थापन की तस्वीर प्रस्तुत करता है। किस तरह और किन परिस्थितियों के चलते सीधा-सादा ग्रामीण विवश होकर गंदी बस्ती बनाता और बढ़ाता चला जाता है। जीवन की रक्षा के लिए जीवन मूल्य किस प्रकार बदलने लगते है।

निष्कर्ष

जीवन, समाज परंपराओं आदि विषयों पर बदलती मान्यताएँ गोदान के ग्रामीण जीवन को वर्तमान समाज की दहलीज पर खड़ा होने की कथा कहती है। प्रेमचंद हमें बताते हैं कि किस प्रकार अपनी परंपराओं को निभाने की चाह में ग्रामीण लालची स्वार्थी लोगों और उनके द्वारा छलपूर्वक रची गई परिस्थितियों से प्रभावित होकर 80 की गाय के गोदान की जगह भूख सहकर मजदूरी करके कमाए गए मात्र 20 आने में गोदान करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1 हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ 381

2 प्रेमचंद, कमल किशोर गोयनका, पृष्ठ 56

3 हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास , गणपतिचंद्र गुप्त, पृष्ठ 452

4 हिंदी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ 38

5 गोदान, प्रेमचंद, पृष्ठ 19

6 गोदान, प्रेमचंद, पृष्ठ 228